पिट्स

आर.एन.आई. ३८१३९/८१

www.pits.co.in

वर्ष २९ अंक-२२ सोमवार, १९ जनवरी २००९ पृष्ठ १६ मूल्य दो रुपये

इंदौर-मुंबई से एक साथ प्रकाशित

हेयर स्टाइल बदलेंगी करीना

जब बॉलीवुड के लगभग सारे पुरुष कलाकार अपने 'लुक' के साथ खेल रहे हैं तो भला हसीनाएं क्यों पीछे रहें! अब हसीनाओं ने भी खुद को बदलने के लिए कमर कस ली है। शायद इसकी शुरुआत करने वाली है करीना कपूर। सुना है वह अपने 'बोरिंग' बालों के स्टाइल को बदलने वाली है। जबसे वह फिल्म इंडस्ट्री में आई है उसके बालों का लुक वही सीधा-सपाट है। कहा जा रहा है कि उसके हमदम सैफ अली खान ने उसे यह नेक कदम उठाने की सलाह दी है। नवाबसाब की बात को वह ठुकरा भी तो नहीं सकती न? और जब सलाह अच्छी है तो मानने में क्या हर्ज है? सो, बेबो जल्द ही एक नए लुक के साथ दर्शकों से मुखातिब होगी। आखिर खबरों में बने रहने के लिए कुछ अलग तो करना ही पड़ता है।

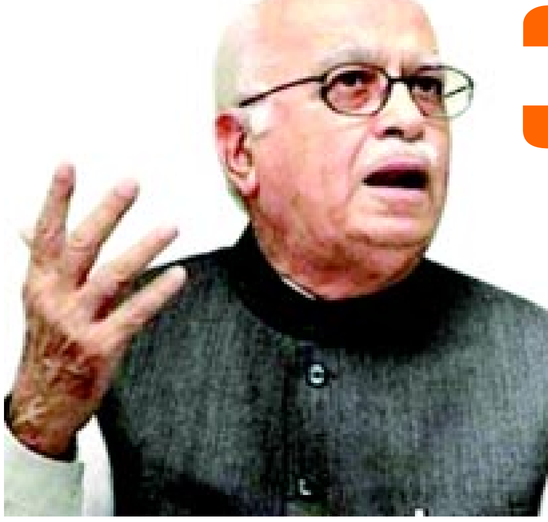

आडवाणी बनाम नरेन्द्र मोदी

(पिट्स दिल्ली ब्यूरो)

आरामदायक तरीके से केन्द्र में सरकार बनाने और अपने दिग्गज लालकृष्ण आडवाणी को प्रधानमंत्री की कुर्सी दिलवाने का सपना देख रही भाजपा को देश के दो शीर्षस्थ उद्योगपतियों ने जो झटका दिया है उससे पूरी पार्टी सांसत में आ गई है. पिछले डेढ़ वर्ष से भाजपा पीएम इन वेटिंग के रूप में लालकृष्ण आडवाणी को देश भर में प्रचारित कर रही थी, उसने अपने इस निर्णय पर राजग के सभी सहयोगियों से भी मोहर लगवा ली थी लेकिन उसके नेतृत्व को इस बात का जरा भी अहसास नहीं था कि उसका अपना घर ही सुरक्षित नहीं है. उसके स्टार प्रचारक के रूप में देश भर में घूम रहे नरेन्द्र मोदी का मन शायद गुजरात से भर गया है तथा नजर अब दिल्ली पर टिक गई है. सो उन्होंने पार्टी में अपने को पीएम पद का दावेदार बनाने के लिये ऐसी चाल चली की सभी दिग्गज बगलें झांकने पर मजबूर हो गये. नरेन्द्र मोदी ने ग्लोबल मीट के जरिये देश के दिग्गज उद्योग घरानों को गुजरात में इकट्ठा किया और इन्हीं में से दो उद्योगपतियों अनिल अम्बानी और सुनील मित्तल के मुख से स्वयं को प्रधानमंत्री का दावेदार घोषित करवा कर पूरी पार्टी को दो भागों में विभाजित करवा दिया. आडवाणी के आगे कुछ वर्षों से नरेन्द्र मोदी का ग्लेमर भारी पड़ रहा है. पार्टी में भी मोदी के समर्थकों की तादाद लगातार बढ़ रही है. ऐसे में उनका यह नया पेंतरा देश में एक नई बहस को जन्म दे रहा है.

पार्टी कार्यकर्ता ही नहीं जनता भी आडवाणी और मोदी में तुलना करने लगे हैं. आडवाणी जहां संसद में विपक्ष के नेता और पार्टी के सबसे वरिष्ठ नेता होते हुए राष्ट्रीय राजनीति में वर्षों से स्थापित है वहीं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का भी उन्हें पूरा समर्थन है. पार्टी में उनके कद का कोई नेता नहीं है, लेकिन बाबरी मस्जिद का प्रकरण के साए ने उन्हें अब भी परेशान किए हुए है वहीं 2005 में जिन्ना पर की गई टिप्पणी से संघ और हिंदूवादी धड़ा खासा नाराज है. कांग्रेस के युवा नेता राहुल गांधी की चुनौती के मुकाबले लायक भी उन्हें नहीं माना जाता. आडवाणी के विपरित नरेन्द्र मोदी ने अपना राजनीति जीवन एक साधारण कार्यकर्ता के रूप में शुरू किया.

शेष अंतिम पेज पर....

प्रत्याशी चयन की कवायद शुरू

रामस्वरूप मंत्री

लोकसभा चुनाव की दुदुंभी बजने लगी है. समर शुरू होने में भले ही अभी दो-ढाई माह का समय बाकी हो लेकिन प्रदेश के प्रमुख राजनीतिक दलों भाजपा और कांग्रेस ने प्रदेश की 29 लोकसभा सीटों पर जीताऊ उम्मीदवारों की तलाश शुरू कर दी है. दोनों ही दल म.प्र. में ज्यादा से ज्यादा सांसद जिताकर केन्द्र में सरकार में आने की स्थिति मजबूत करना चाहते हैं. 19 जनवरी से प्रत्याशी की तलाश और योग्यताओं पर मोहर लगाने के लिये दोनो दलों के निर्णायक नेताओं की बैठक दिल्ली में शुरू हो गई. दोनों दलों ने टिकट देने का अपना-अपना पैमाना तय कर लिया है. प्रत्याशी चयन की इस कवायद में पहला लक्ष्य सीट अपनी झोली में डालना ही है. कांग्रेस जहां प्रत्याशी चयन के लिये सभी सीटों पर पर्यवेक्षक भेज रही है. वहीं भाजपा विधानसभा चुनाव की तरह ही सवा दर्जन क्षेत्रों में प्रत्याशी बदल का अपना फार्मूला अपनाते हुए नये चेहरों को मौका देना चाहती है. कुछेक सीटों पर मुख्यमंत्री के इनकार के बावजूद विधायकों को प्रत्याशी बनाया जा सकता है.

भाजपा साख बचाने और कांग्रेस लाभ कमाने की रणनीति बनाने में जुटी

शेष अंतिम पेज पर....

इनकी मान्यता...

उत्तम झंवर

पिछले दिनों रिलीज हुई गजनी ने सिनेमा के कई बड़े रिकॉर्ड तोड़े। आमिर खान की मिस्टर परफेक्शनिस्ट की छवि एक बार फिर साबित होने के साथ यह बात भी प्रूव हो गई कि पूरी ताकत झोंक देने के बाद रिजल्ट तो मिलता ही है। विश्वभर में कास्ट कटिंग का दौर चल रहा है। ऐसे में हर इंसान सौ के बजाय दो सौ फीसदी रिजल्ट देने में लगा है। कंपनियां भी कोशिश में लगी हैं कि ज्यादा दबाव बनाए बिना बेहतर काम करवाया जा सके। पिछले दिनों मैं युवाओं के ऐसे ग्रुप से मिला जो आईआईएम से मैनेजमेंट की डिग्री हासिल करने वाले हैं। दो माह बाद उनके हाथ में डिग्री के साथ प्लेसमेंट के परिणाम भी होंगे। पता चला कि इस बार बाहर की कंपनियां कम आ रही हैं। भारतीय स्तर की कंपनियों पर घटते पैकेज में काम करना होगा। ज्यादा विस्तृत चर्चा करने पर मैंने पाया कि इन युवाओं पर इसका प्रभाव कम है। उनका प्लान यूं भी किसी बड़ी कंपनी में जाने के बजाय ग्रामीण स्तर पर बिजनेस को बढ़ाने का है। हर एमएनसी अब छोटे अंचलों को बढ़ावा दे रही है। शहर के बाद अब ग्राहकों का बड़ा हूजूम यहीं बचा है। इसीलिए मिस इंडिया हो या गोल्डल ग्लोब विजेता स्लम डॉग मिलेनियर में दो मिनट का किरदार निभाने वाली नागदा की संचिता सभी आगे बढ़ रहे हैं। या यूं कहा जाए कि बाजार की मंदी को दूर करने के लिए कस्बों और गांवों को हाईलाइट कर आगे लाया जा रहा है। ये ट्रैंड कुछ ऐसा है जैसे संजय दत्त नहीं तो मान्यता, चुनाव तो लड़वाया ही जाएगा। वो भी इसी परिवार से। हालांकि मान्यता को लेकर कर लग रही अटकलों के बावजूद तय हो गया कि संजय दत्त सपा की तरफ से चुनाव लडेगें। एक पारी की सरकार बन चुकी है दूसरी की तैयारी है। देखें अब किसकी क्या मान्यता होती है..।